फुरफुर फुरसती

लेखिका-गौरी बर्मन
चित्रांकन-पुष्पल देब

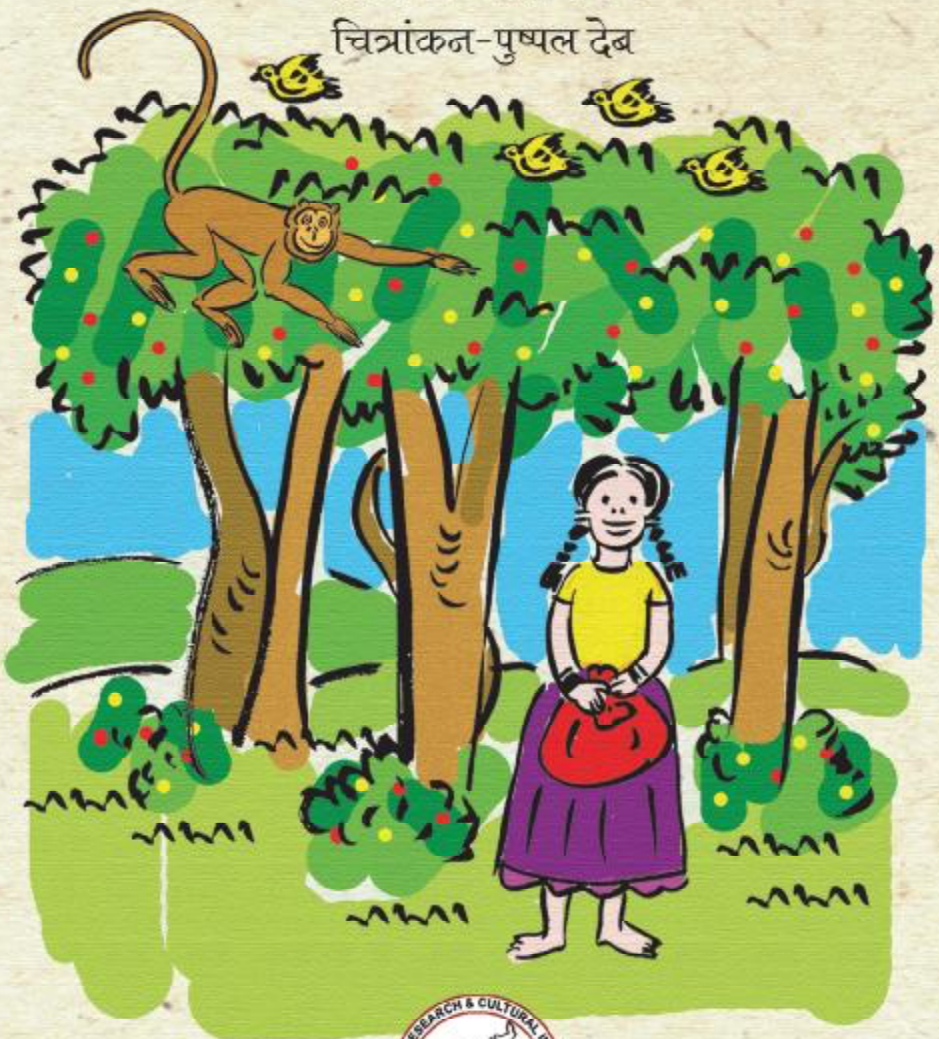

Tribal Research & Cultural Institute
Government of Tripura

Furfur Fursati : **Gouri Barman**
Published by :
Tribal Research & Cultural Institute
Government of Tripura.
© Tribal Research & Cultural Institute
Government of Tripura

First edition : 3rd August, 2020

Cover Design & Illustration : Pushpal Deb
Type Setting : Shabdachitra, Agartala
Printed by : Kalika Press Pvt. Ltd., Kolkata

ISBN : 978-93-86707-64-2
Price : Rs. 60/-

फुरफुर फुरसती

लेखिका-गौरी बर्मन
चित्रांकन-पुष्पल देब

TRIBAL RESEARCH & CULTURAL INSTITUTE
GOVERNMENT OF TRIPURA

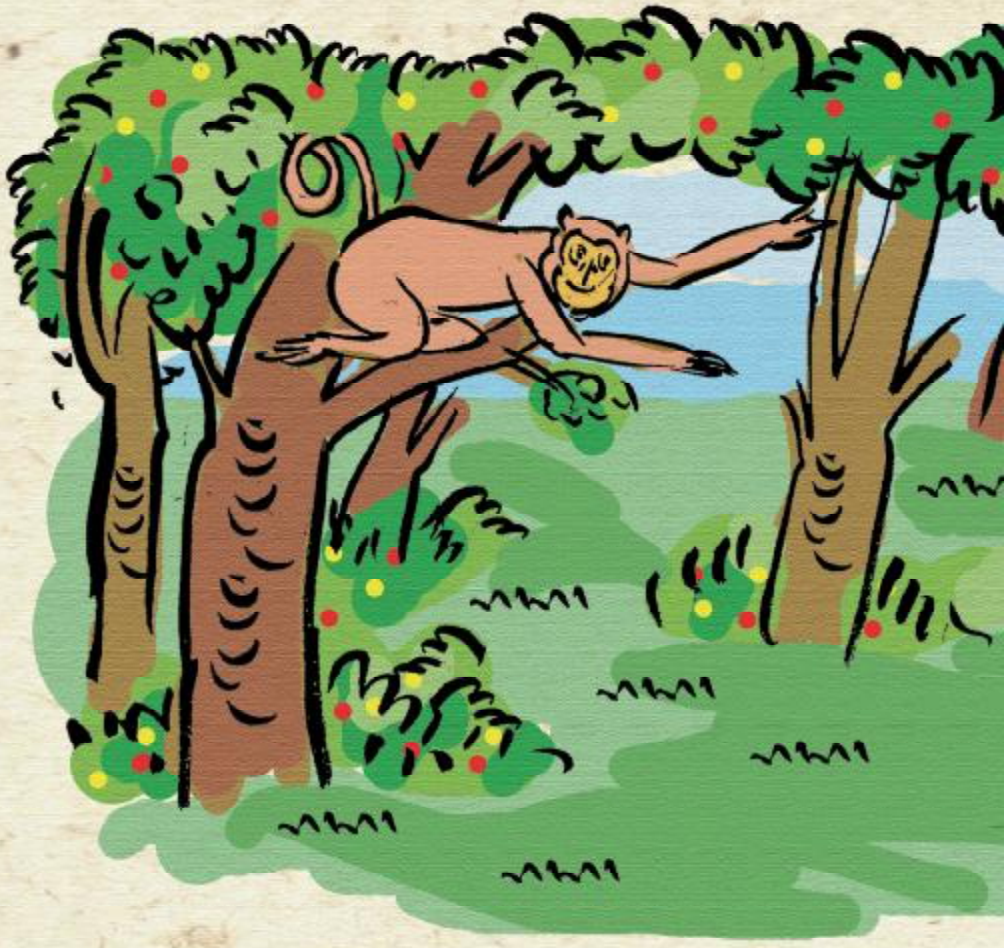

बहुत जल्दी में है फुरसती। हाथ में गमछे से बंधी खाने की पोंटली झुल रही हैं।

सुबह का समय हैं। पुरब दिशा में सिंदूरी लालिमा छाई हैं। ना, वह कुछ भी नहीं देख रही। दादाजी का खाना पहुँचा कर, धूप चढ़ने से पहले घर आ जाना हैं।

—फुरसती, एअ फुरसती ...।

ना किसी की सुने, ना किसी की देखे, फुरसती बस् चलती जा रही हैं।

—अरे, ओ लड़की मेरी दोस्त ... कहाँ जा रही हो?

—पुकारो मत, मैरे पास समय कम हैं ...।

—समय कम है, इसीलिए तो बुला रहा हूँ।

फुरसती ने मुड़कर देखा तो लगा पुकारनेवाला जाना-पहचाना हैं। लेकिन उसके कदम नहीं रुके।

—ओ हो हो चन्दुर-बंदुर, तुम हो।

घर के पास के जंगल में रहता है चन्दुर।

फुरसती का दोस्त। समय पर उसके खेल का साथी, चश्मा-बंदर।

—इतनी सुबह कहाँ जा रही हो?

—दादाजी कल घर पर नहीं आए। रात को झूम खेत के मचान पर सो गए। पहरा चल रहा है ना?

—हाँ, वो तो होना ही है। लेकिन दादालोगों ने कब से पहरेदारी शुरु की।

फसल पकने का समय है। इन दिनों सुअर, गाय, हिरनों का वहाँ आना-जाना बढ़ जाता है। चारों और हरियाली ही हरियाली, देखकर खाने का मन करता है। जबतक फसल कटकर घर नहीं आ जाती, तबतक रात-दिन पहरा देना ही पड़ेगा।

—सुनो भाई चन्दुर, अभी मुझे किसी से बात करने की फुरसत नहीं है। खाना पहुँचाने के बाद मुझे दादीजी के कामों में भी हाथ बटाना है।

एक डाली से दुसरी डाली पर कूदते हुए चन्दुर बोला

—भागाभागी मत् करो। हम सब हैं ना, तुम्हारी सहायता करने के लिए। तुम्हें जल्दी हैं, मैं तुम्हें पहुँचा दूंगा।

—ना बाबा ना, दादी ने कहा है कि इधर-उधर खेलने या किसी से बतियाते मत् लगना। दादाजी का खाना देकर रात के बर्तन लेती आना।

फुरसती दौड़ रही हैं। चन्दुर भी दौड़ा। इतने में टिलिक-झिलिक चिड़िया, उराली-सुराली गिलहरी, झुनझुन मैंना सब बाहर निकल आए। सबने फुरसती को रोकने की कोशिश की। लेकिन फुरसती की एक ही बात।

—समय नहीं, समय नहीं हैं।

—फुरसती हमारी बात तो सुनो।

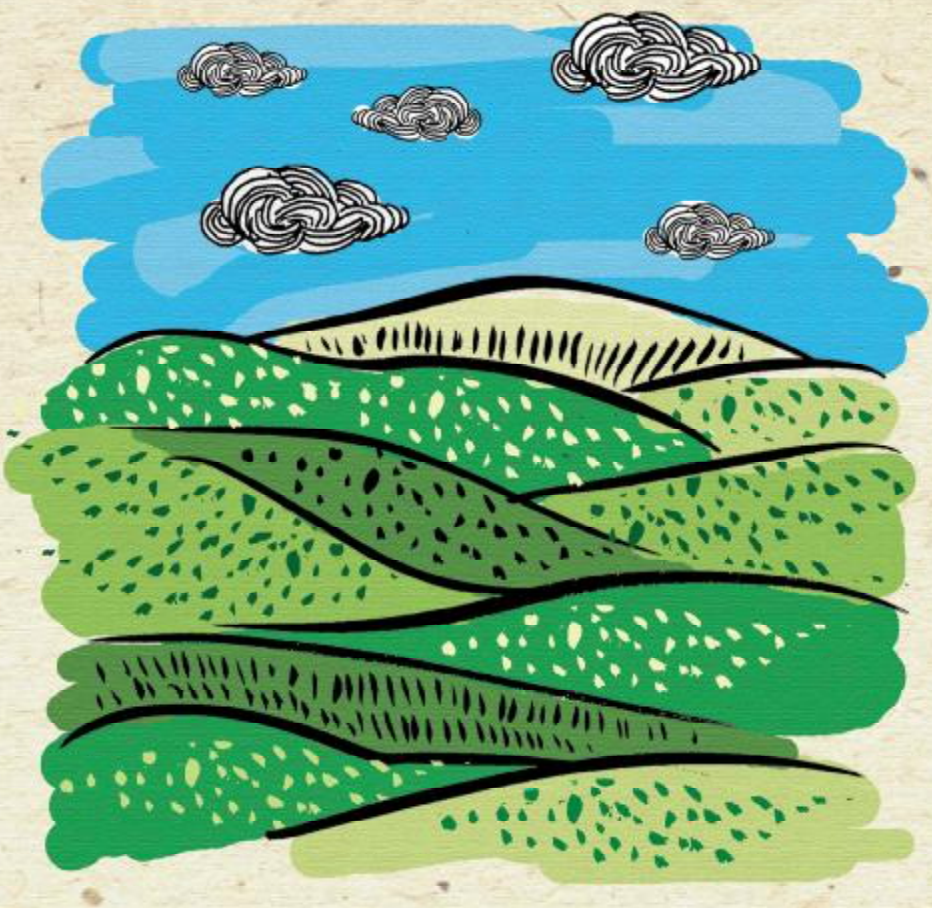

चिड़ियाँ और जानवर कहने लगे।

—सुनो, मैं पहले दादाजी का खाना पहुँचा दूँ, फिर बात करूँगी। चलती रही फुरसती।

—दो टीलों के बाद खाई हैं, जल-जंगल और जमीन हैं। इसके बाद दादाजी का खेत हैं। जा पाओगी इतनी दूर। बीच में पहाड़ी नदी भी हैं। जिसकी धार तेज हैं।

—भाई, जाना तो होगा ही।

—डर नहीं लगता?

—देखो आसमान में काले बादल छाए हुए हैं। बारिश होने ही वाली हैं।

—अरे नहीं नहीं ...। आप सब हैं ना, डर कैसा!

लो, बात खतम नहीं हुई कि झमाझम शुरु ... अब क्या होगा? सुबह की लाली कहाँ चली गई, यहाँ तो बादल ही बादल हैं।

फुरसती

कर पानी गिराना शुरु कर दिया। फुरसती का मन उदास। ठंडी हवा, रे-मझिम पानी की बुँदे उसे बहुत अच्छी लगती हैं। ऐसे मौसम में उसे गाना गाने, नाचने का मन होता हैं। लेकिन फिलहाल दिमाग में दादाजी को खाना पहुँचाने की बात हैं। दादा-दादी फुरसती की जान हैं। उनके अलावा फुरसती का और कोई नहीं। वे अच्छे रहेंगे तो फुरसती भी अच्छी रहेगी।

तभी चन्दुर-बन्दुर धम् से सामने आ खड़ा हुआ।

—क्या, तुम दादाजी की बात सोच रही हो? एक काम करो मेरी पीठपर चढ़ जाओ।

—तो क्या होगा? बारिश में भीगना ही होगा।

—चिंता मत् करो, मैं तुम्हें डाल-डाल होते हुए छिपाकर ले जाऊँगा। चलो आ जाओ।

—चलो पीठपर चढ़ जाओ।

गिलहरी, चिड़िया, मैंना सब एक ही बात कहने लगी।

—मान जाओ दोस्त। वे कहने लगे।

रिमझिम बारिश हो रही थी।

फुरसती चन्दुर की पीठपर चढ़ गई और उसकी गर्दन को थाम लिया। इतने में गिलहरी दादाजी की खाने के पोंटली मुँह में लैकर आगे आगे चलने लगी। इस डाली, उस डाली; कूद फाँद कर चन्दुर आगे बढ़ने लगा।

की बात फुरसती ने मान ली, तभी तो इतनी सुन्दर बारिश में जंगली हरियाली देखने को मिली।

—चन्दुर भाई, इतने डंडे खेतों में? वह क्या हैं?

—वह सब, डाँटा खेत हैं। पास में ही पुंईचारा हैं। ओह ये तरबूज का खेत हैं। क्या हालत हैं, कल रात के ओलों से खेती को बहुत नुकसान पहुँचा हैं।

—तुम्हारे दादाजी का दिल बहुत दुखा होगा।

—घास को देखो बारिश व हवा से कैसे झूम रही है। मानो नाच रही है। अच्छा, मेरी दोस्त गिलहरी कहाँ हैं, दिख नहीं रही।

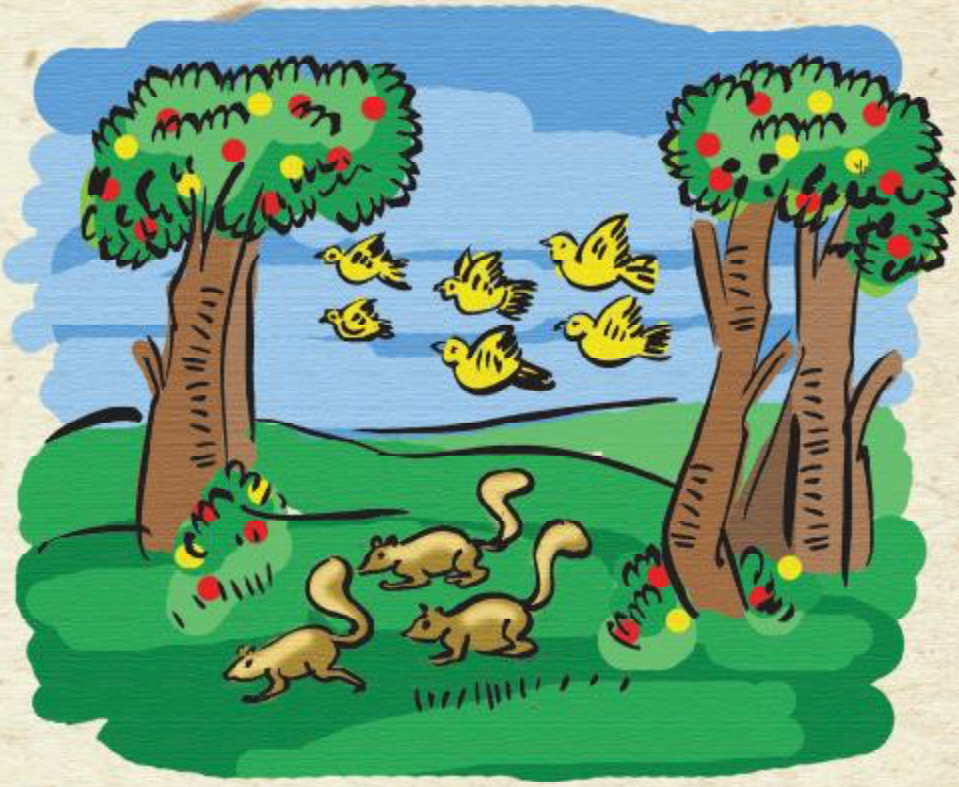

—चिन्ता मत करो, वह दादाजी के मचान तक पहुँच गई हैं।

—शैतान कहीं की, दादाजी के खाने में मुँह न मार दे।

—ऐसे मत बोलो दौस्त, हम सब मित्र है। तुम्हारे साथ ऐसा क्यों क-रेगें, पुरानी बातें भूल जाओ।

फुरसती को लेकर चन्दुर नदी के पास पहुँचा।

—अरे बाबा, ये छोटी सी नदी इतनी बिशाल कैसे हो गई? धार भी तेज हैं।

—भाई कैसे पार करेंगें? बारिश भी बढ़ गई हैं।

—डरो मत, तुम पेड़ के नीचे खड़ी रहो, मै हुँ ना। चन्दुर ने बोला।

फुरसती चन्दुर की पीठ से उतरी। चन्दुर यहाँ पास ही एक अखी के खेत से एक बड़ा सा अरबी का पत्ता ले आया।

—लो, इस से सिर ढक लो।

—अरे चंदू, तुम कितने समझदार हो!

—घबराओ मत, इस बार मैं एक लम्बी छलांग लगाऊँगा। मेरी गर्दन ठीक से पकड़ लो।

फुरसती ने आँखे बंद की और कसकर चंदू की गर्दन पकड़ ली ...।

—जय हनुमान जी की ...।

फुरसती धड़ाम से कटी धान की फसल पर जा गिरी। डर से उसकी आँखें बंद थी। गिरकर भी उसे दर्द नहीं हुआ था। उसने धीरे से अपनी आँखें खोली और हँसने लगी। दादा-दादी भी उसे देखकर हँस रहे थे।

दादाजी के मचान की तो धज्जियाँ उड़ गई थीं। फुरसती की पोंटली भी धान के फसल के ढेर पर पड़ी थी।

—देखो तो, खुले आसमान के नीचे सोने में कितना मजा आता है। रिमझिम बारिश से और भला लगता है।

फुरसती की नींद टूट गई। उसकी आँखे अभी भी भारी थीं। चन्दुर पास ही आम के पेड़ पर कूद रहा था। उसने एक कच्चा आम फुरसती की ओर फेंका। गिलहरी एक छोटा सा कटहल दोनों पैरों में पकड़कर मजे से कुतर रही थी। मैंना, गौरेया सब डालों पर बैठे थे। बारिश में पंख भीगने के कारण आज उड़ना मुशकिल जो था।

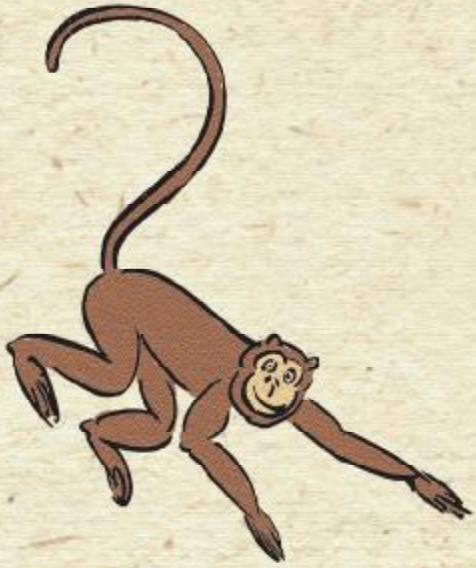

गौरी बर्मन, त्रिपुरा की मिट्टी, पानी ओर हवा मे बड़ी हुई है। इनकी प्राथमिक शिक्षा अंरुधतिनगर स्कूल से एवं माध्यमिक शिक्षा नेताजी सुभाष बिध्यानिकेतन से ओर स्नातक महिला महाबिध्यालय अगरतला से हुई है।

गौरी बर्मन, पेशे केन्द्रीय बिद्यालय मे शिक्षिका रही है। इन्होने लेखन की शरुआत त्रिपुरा दर्पण पत्रिका से की है। इन्होने विभिन्न लेख, कहानी एवं फीचर लिखे है। ये नियमित रूप से महिलाओं एवं बच्चों के विषय मे लिखने ओर सोचने के लिए उत्सुक रहती है।

इनकी प्रकाशित कहानिया :- (शितदुपुरेर रोद (२००६), जीबनेर नामता (२००९), जारे जा उरे (२०१०), (छोटोदेर गल्प संकलन) त्रिपुरा की जनजातीय लोककथाएँ (हिन्दी अनुवाद, २०१२, प्रकाशक : एन. बी टी.), एखोनों अनेक गल्प बला बाकी (२०१५)।

समय-समय पर साहित्य अकादमी द्वारा कहानी पाठ करने पर आमंत्रित किया जाता है। रेडियो व दूरदर्शन में साहित्य की आलोचना में सक्रिय रूप से भाग लेना।

एक छोटे से पहाड़ी गाँव की बेटी फुरसती। उसके साथी चशमा बंदर, गिलहरी, सूअर, मैंना। त्रिपुरा के पहाड़, जंगल, सोंधी मिट्टी की खुशबु, ठंडी हवा के झोकें। दिन में इन्हीं के साथ हँसते खेलने वक्त गुजरते, रात के सपनों में भी इन्हीं के साथ लुकाछिपी। फुरसती की इन्हीं सपनों की कहानी है—फुरफुर फुरसती।

Tribal Research & Cultural Institute

978-93-86707-64-2

ISBN : 978-93-86707-64-2
Price : Rs. 60/-